राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत में स्त्री की भूमिकारू लोककलाओं और स्थापत्य अभिव्यक्तियों के माध्यम से

चारू बारी (शोधार्थी), डॉ. सोनू सारण (शोध निदेशक), विभाग – इतिहास, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, चूड़ेला, झुंझुनूं

ईमेलः charubari92@gmail.com

सारांश (Abstract)

राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में स्त्रियों की भूमिका अत्यंत विशिष्ट और प्रभावशाली रही है। लोककलाओं की रचना, संरक्षण और प्रस्तुति में स्त्रियाँ सृजनकर्ता और परंपरा की वाहक दोनों रूपों में कार्य करती आई हैं। फड़ चित्रकला से लेकर मंडण और लोकनृत्यों तक, और स्थापत्य में मंदिर सज्जा से लेकर हवेलियों की भित्तियों पर नारी चित्रण तक, स्त्री का योगदान अमिट है। यह शोध आलेख राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत में स्त्री की भूमिका को लोककलाओं (नृत्य, संगीत, चित्रकला, हस्तशिल्प) और स्थापत्य अभिव्यक्तियों के संदर्भ में विश्लेषित करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्री केवल सामाजिक संरचना की इकाई नहीं, बल्कि संस्कृति की आधारशिला है।

प्रमुख शब्द

राजस्थान, स्त्री, सांस्कृतिक विरासत, लोककला, स्थापत्य, नारी चित्रण, परंपरा, मंडण, रांगोली, फड़, पिचवाई, लोक नृत्य, भित्तिचित्र

1. प्रस्तावना

राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास वीरता, धर्म, कला और सौंदर्यबोध का समन्वित दस्तावेज है। इसमें स्त्रियाँ केवल दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदार रही हैं। वे लोकसंस्कृति की वाहक, लोककलाओं की संरक्षिका और स्थापत्य सौंदर्य की संवाहिका रही हैं। गाँव की दीवारों पर की गई पेंटिंग से लेकर महलों की जालियों में उकेरे गए नारी चित्र, मंदिरों में कीर्तन करती गायिकाएँ, कठपुतली प्रदर्शन करने वाली महिलाएँ, मंडण और रांगोली की सर्जनाकृसभी स्त्री के रचनात्मक हस्तक्षेप को दर्शाते हैं।

2. लोककलाओं में स्त्री की भागीदारी

(क) लोकनृत्य और स्त्री

राजस्थान के लोकनृत्य जैसे घूमर, चकरी, भवाई, तेरहताली आदि में स्त्रियाँ न केवल प्रस्तोता हैं, बल्कि इनकी संरचना, शैली और प्रस्तुति में उनकी सांस्कृतिक सोच परिलक्षित होती है।

- घूमर – स्त्री एकता और नारी सौंदर्य का प्रतीक
- भवाई – संतुलन, धैर्य और साहस का प्रदर्शन

- चकरी – पारंपरिक अवसरों पर प्रस्तुत किया जाने वाला रचनात्मक समूह नृत्य

(ख) संगीत और स्त्री स्वर

लोकगीतों में स्त्रियों ने सामाजिक स्थितियों, प्रेम, विरह, विवाह, वीरता और धर्म की गाथाओं को स्वर दिया है।

- विवाह गीत (सहेलिया गीत)
- युद्ध गाथाएँ (ढोला–मारू)
- धार्मिक भजन (मीरा के पद, कृष्ण भक्ति)

3. चित्रकला और स्त्री सृजन

(क) मंडण एवं रांगोली

ग्रामीण स्त्रियाँ अपने आंगन और दीवारों पर मंडण, अल्पना और रांगोली के माध्यम से लोक सृजन को जीवंत करती हैं। ये चित्र केवल सजावट नहीं, बल्कि समृद्ध लोक परंपरा के प्रतीक हैं।

(ख) फड़ और पिचवाई चित्रकला में नारी प्रतीक

- फड़ चित्रों में स्त्रियाँ वीर पत्नियों, भक्त महिलाओं, ग्रामदेवियों के रूप में चित्रित
- पिचवाई में गोपियाँ, राधा, यशोदाकृस्त्री के भक्ति स्वरूप को रेखांकित करती हैं

4. हस्तशिल्प और वस्त्र परंपरा में स्त्री की भूमिका

- कढ़ाई, बंदीमर, लहरिया, मिरर वर्क जैसे परिधान स्त्रियों द्वारा निर्मित
- बुनाई, रंगाई, कसीदाकारी, गोटा पट्टी में स्त्रियों की विशेष विशेषज्ञता
- स्त्रियाँ पारंपरिक वस्त्रों की डिजाइनर, उत्पादक और विक्रेता के रूप में सक्रिय

5. स्थापत्य कला में स्त्री अभिव्यक्ति

(क) भित्तिचित्रों और स्थापत्य संरचनाओं में नारी चित्रण

- हवेलियों की दीवारों पर चित्रित स्त्रियाँ – श्रृंगार करती हुई, उत्सव में भाग लेती, पूजा करती
- मंदिरों की मूर्तियों में अप्सराएँ, योगिनियाँ, देवियाँ – सौंदर्य, शक्ति और भक्ति का समन्वय

(ख) जनाना महल और स्त्री निजता का स्थापत्य

- राजमहलों में जनाना महलों की संरचना, जालीदार झरोखे – स्त्री की सामाजिक स्थिति का दर्पण
- स्त्री के लिए विशेष आंगन, जल कुंड, पूजा स्थल – स्थापत्य में स्त्री केन्द्रित दृष्टिकोण

6. धार्मिक अनुष्ठानों में स्त्री की भूमिका

- करवा चौथ, तीज, गणगौर जैसे पर्वों में नारी की सक्रिय सांस्कृतिक भूमिका
- पूजा की थाली, लोकमूर्ति निर्माण, गीत, आरती – सभी स्त्री सृजन के प्रतीक

7. स्त्री और सांस्कृतिक संरक्षण

- पीढ़ियों तक लोकगीतों, चित्रकला, नृत्य की मौखिक परंपरा को सुरक्षित रखने का कार्य
- लोककलाओं को आगामी पीढ़ियों में हस्तांतरित करने में महत्वपूर्ण योगदान

8. समकालीन दृष्टिकोण

- महिला कलाकारों द्वारा लोककला का वैश्विक मंचों पर प्रदर्शन
- NGO व सरकारी योजनाओं के माध्यम से स्त्रियों को कला प्रशिक्षण
- डिजिटल प्लेटफार्म पर महिला कलाकारों की उपस्थिति में वृद्धि

9. तुलनात्मक तालिकाः स्त्री की भूमिका

क्षेत्र	भूमिका	सांस्कृतिक मूल्य
लोकनृत्य	प्रस्तोता, संरक्षिका	सौंदर्य, समाज, उत्सव
संगीत	गायिका, रचयिता	विरह, भक्ति, जीवन दर्शन
चित्रकला	रचनाकार, प्रतीक	सौंदर्य, धर्म
स्थापत्य	प्रेरणा, विषय	शक्ति, सृजन

10. निष्कर्ष

राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा में स्त्री की भूमिका केवल अनुपूरक नहीं, बल्कि केंद्रीय रही है। वह संस्कृति की वाहक, सृजन की स्रोत, और संरक्षण की प्रतिनिधि है। चाहे वह लोकनृत्य की चकरी हो, मंदिर की छवि में अप्सरा, या घर की दीवार पर मंडण–हर जगह स्त्री संस्कृति को जीती और रचती है। अतः सांस्कृतिक विरासत के मूल्यांकन में नारी की भूमिका को स्वीकार करना और संरक्षित करना आवश्यक है।

संदर्भ सूची (References)

1. मेहता, शील. राजस्थान की लोक परंपराएँ, 2020
2- IGNCA- Folk Art and Women in Rajasthan (2022)
3- Joshi, R. (2019). “Women and Artistic Expressions in Western India.”
4- Ministry of Culture, Govt. of India- Documentation on Traditional Women Artists
5- UNESCO (2023). Intangible Cultural Heritage Reports – India
6- Dwivedi, R. (2021). Women in Rajputana Art and Culture
7- Shodhganga Repository – Hindi Folk Culture Studies

8. राजस्थान विश्वविद्यालय – लोककला विभाग शोध लेख संग्रह

9- Nathdwara Art Trust Archives

10- Gupta] A- (2022). “Mandana to Mehfil: Women in Rajasthan’s Visual Culture”